

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री नृसिंहपुराणे श्री मार्कण्डेय विरचिता
॥ श्री नृसिंहस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री नृसिंहस्तुतिः ॥

मार्कण्डेय उवाच

नरं नृसिंहं नरनाथमच्युतं

प्रलम्बबाह्वं कमलायतेक्षणम्।

स्फितीश्वरैरर्चितपादपङ्कजं

नमामि रिषुं पुरुषं पुरातनम् ॥ 1 ॥

जगत्पतिं स्फिरीसमुद्रमन्दिरं

तं शार्ङ्गपाणिं मुनिवृन्दरन्दितम्।

प्रियः पतिं श्रीधरमीशमीश्वरं

नमामि गोरिन्दमनन्तरर्चसम् ॥ 2 ॥

अजं वरेण्यं जनदुःखनाशनं

गुरुं पुराणं पुरुषोत्तमं प्रभुम्।

सहस्रसूर्यद्युतिमन्तमच्युतं

नमामि भक्त्या हरिमाद्यमाधरम् ॥ 3 ॥

पुरस्कृतं पुण्यरतां परां गतिं

स्फितीश्वरं लोकपतिं प्रजापतिम्।

परम्पराणामपि कारणं हरिं

नमामि लोकत्रयकर्मसाङ्गिणम् ॥ 4 ॥

भोगे व्रनन्तस्य पयोदधौ सुरः

पुरा हि शेते भगवाननादिकुं।

ক্ষীরোদরীচীকণিকাম্বুনোক্ষিতং
তং শ্রীনিরাসং প্রণতোস্মি কেশরম্ ॥ 5 ॥

যো নারসিংহং রপুরাস্থিতো মহান্
সুরো মুরারির্মধুকৈটভান্তকৃৎ।
সমস্তলোকার্তিহরং হিরণ্যকং
নমামি রিষুং সততং নমামি তম্ ॥ 6 ॥

অনন্তমর্যক্তমতীন্দ্রিয়ং রিভুং
স্বে স্বে হি রূপে স্বয়মের সংস্থিতম্।
যোগশ্বরৈরের সদা নমস্কৃতং
নমামি ভক্ত্যা সততং জনার্দনম্ ॥ 7 ॥

আনন্দমেকং রিরজং রিদাত্মকং
বৃন্দালয়ং যোগিভিরের পূজিতম্।
অণোরণীয়াংসমবৃদ্ধিমক্ষয়ং
নমামি ভক্তপ্রিয়মীশ্বরং হরিম্ ॥ 8 ॥

॥ শ্রী নৃসিংহস্ততিঃ সমাপ্তা ॥